an>

Title: Need to investigate the killing of owner of tea garden by the labourers in Malbazar area of Jalpaiguri district in the Western Bengal.

श्री प्रह्लाद सिंह पटेल (दमोह) : नहीं मैडम, यह स्टेट मैटर नहीं है।

माननीय अध्यक्ष : ठीक है।

श्री प्रह्लाद सिंह पटेल : अध्यक्ष महोदया, जलपाईगुड़ी में चाय बगान मालिक की हत्या हुई है, जो वर्ष की दूसरी घटना है। इसके पहले भी एक चाय बगान के मालिक को आग में जलाकर मारा गया था। दूसरी बात, मैं या मेरी विचारधारा यह कहती है कि " मालिक मज़दूर भाई-भाई, हिसाब होगा पाई-पाई। " क्या इस घटना के पीछे श्रमिकों की लूट-खसोट का मामला है, यह विचार का बिन्दु हो सकता है। लेकिन हम यह देखते रहे हैं कि वामपंथी उग्रवादियों ने ही ऐसी घटनाएँ की हैं। लेकिन जो पूर्वांचल का प्रांत है, वहाँ पर एक नई राजनीतिक संस्कृति शुरू हुई है, कहीं यह उसका परिणाम तो नहीं है? क्योंकि यदि इस दृष्टि से देखा जाए, यदि वेज़ की बात है, किसी असहयोग की बात है, तो हो सकता है कि यह राज्य सरकार की कानून-व्यवस्था का मामला हो। लेकिन मुझे सरकार और सदन का ध्यान इसलिए आकृष्ट करना है क्योंकि ये घटनाएँ उन पूर्वोत्तर राज्यों में ही क्यों हो रही हैं। आज के ही अखबार में मुज़फ्फरनगर में सी.आर.पी.एफ. कैम्प के बगल में नक्सलवादियों ने फ्लैट खरीद लिया। मैं आपके माध्यम से यह बात सदन और सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं कि आतंकवादी जिस तरीके से इन क्षेत्रों में घुसकर मज़दूरों के आंदोलनों में शामिल होकर जो परिस्थिति देश के सामने निर्मित कर रहे हैं, यह एक गंभीर सवाल है। इसको सिर्फ राज्य के आधार पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। पूर्वांचल के राज्यों में जो गतिविधियाँ हो रही हैं, चाहे वह मज़दूर आंदोलन हो या अन्यान्य गतिविधियाँ हों, उन सब पर सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

मैं मजदूर क्षेत्र में काम करता रहा हूं, इसलिए जिम्मेदारी के साथ उनका संरक्षण करता हूं कि मजदूरों का हित संरक्षित हो, लेकिन यह तरीका नहीं होना चाहिए कि हिंसावादी प्रतिक्रिया हो और उसके ऐसे परिणाम निकलें। इसलिए मैं चाहता हूं कि सरकार इस पर तत्काल कार्रवाई करे।

श्री पी.पी.चौधरी (पाली) : मैं श्री प्रह्लाद सिंह पटेल द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

श्री एस.एस.अहलुवालिया (दार्जिलिंग): महोदया, मैं श्री प्रह्लाद सिंह पटेल जी द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करते हुए यह जोड़ना चाहता हूं कि चाय बागान प्लांटेशन डिपार्टमेंट, टी बोर्ड ऑफ इंडिया और वाणिज्य मंत्रालय के तहत आता है। वहां पर बहुत दिनों से लोग आन्दोलनरत हैं, क्योंकि उनको सोशल सिक्योरिटी के लाभ उपलब्ध नहीं हैं, मिनिमम वेजेज एक्ट लागू नहीं हुआ है, बहुत सारी चीजें हैं जो बार-बार वहां के मजदूरों को उद्वेलित करती हैं। जब उनका चाय बागान के प्रशासन या सरकारी प्रशासन द्वारा उनका दमन किया जाता है, तब उसका रूप इस तरह से वीभत्स होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना है, इसकी निन्दा करनी चाहिए, लेकिन साथ ही साथ वहां के मजदूरों के संरक्षण की बात भी राज्य सरकार और केन्द्र सरकार को देखनी चाहिए।